IJAER/Feb-March 2015/Volume -4/Issue-2/Article No-4/13-17 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

बिहारी और सतसई की प्रासंगिकता

राज कमल शर्मा
शोधकर्त्ता
महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी
राजस्थान

सार

यदि सूरदास सूर्य के समान है, तुलसीदास चन्द्रमा के समान हैं केशवदास नक्षत्र के समान है तो बिहारी इन सबके प्रतिबिम्वित प्रतिच्छाया के समान हैं। बिहारी भावी कवियों के लिए एक पाठशाला के समान हैं जो प्रत्येके कविमेधा को आलोकित करतें हैं।

कहा जाता है कि बिहारी की पत्नी एक कवयित्री थीं जिसने अपने जीवन काल में 1400 दोहें की रचना की और उन्हीं 1400 दोहों में से 700 दोहों का चुनाव कर बिहारी सतसई की रचना की गई लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता क्योंकि कोई ऐसा प्रमाण नहीं है जिससे इस तथ्य को सही सिद्ध किया जा सके। बिहारी की कवि मेधा पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता।4

बिहारी का काव्य हिन्दी साहित्य के लिए आज भी प्रासंगिकता लिए हुए है। उनका वर्णन केवल रीतिकाल में ही महत्वपूर्ण नहीं था उनका चित्रण आज भी पाठकों के हदय को प्रभावित करता है। उनके काव्य में रस– छन्द– अलंकारों का जैसा ताना–बाना है वह आज भी समायोचित है। रीतिकाल से लेकर वर्तमान काल तक उनका वर्णन न कभी भुलाया जा सकता है और न ही भुलाया जा सकेगा। उनको यूं ही ' गागर में सागर' भरने वाला कवि नहीं माना गया उनके चमत्कार का ही प्रभाव है जो उन्हें रीतिकालीन कवियों की पंक्ति में सर्वश्रेष्ठ कवि की पदवी प्रदान करता है। उनका भक्ति काव्य अपने आराध्य देव श्री कृष्ण को समर्पित है। उनके श्रृंगार पक्ष में भी राधा कृष्ण के प्रेम की प्रतिच्छाया दिखाई देती है। उन्होंने अतिश्योक्ति अलंकार का प्रयोग अपने काव्य में प्रभावोत्पादकता उत्पन्न करने के लिए ही किया है। बिहारी की तुलना किसी अन्य कवि से नहीं की जा सकती क्योंकि जो कवि मेधा बिहारी को प्राप्त थी वह अन्य कवियों में देखने को नहीं मिलती। मध्यकाल में नारी के मॉ, बहन, पत्नी के गौण रूप थे। प्रेयसी का मुख्य रूप प्रचलित था उसी के बिहारी लाल पोषक कवि थे जिसमें उन्हें अभूतपूर्ण सफलता मिली। बिहारी ने अन्य क्षेत्रों में भी अपनी बुद्धि चातुर्यता का भी परिचय दिया। उन्होंने भक्ति नीति, ज्योतिष, गणित दर्शन आदि क्षेत्रों में भी बड़े सजीव चित्रण प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने अभिधा, लक्षणा, व्यंजना आदि शब्द शक्तियों का बडें ही सुन्दर ढंग से निर्वहन किया है।4

वर्तमान कवियों का काव्य श्रृंगार रस के क्षेत्र में केवल उनकी झूठन लगती है आज के कवि रस, छंद, अंलकार विहीन काव्य रचना करते हैं लेकिन बिहारी का काव्य छन्द, युक्त और वह भी केवल दोहा छन्द है। बिहारी ने यदा–कदा ही सोरठा छन्द प्रयुक्त किया है लेकिन वह भी दोहा का ही उल्टा रूप ळें7

मैं लखि नारी ज्ञानु, करि राख्यौ निरधारू यह
वहई रोग–निदानु, वहै बैदु औषाधि वहै।

इस प्रकार बिहारी का काव्य समाचीन है। वर्तमान काल की क्षणिकाएं बिहारी के काव्य की ही देन हैं वर्तमान में कवि सुरेन्द्र कुमार शर्मा की निम्न चार पंक्तियॉ देखिये–

यह जो तुमने आग लगाई,
अब यूँ ही शान्त न यह होगी।

धूँ–धूँ करती चिता जलेगी,
यह जाकर शान्त तभी होगी।

वास्तव में बिहारी के काव्य का प्रभाव वर्तमान कवियों पर भी पडा है यही बिहारी की सफलता है। सफल कवि वही है जिसका काव्य त्रयकाल विजयी हो, और यही बात बिहारी के काव्य पर सही चरितार्थ होता है। इस प्रकार बिहारी का काव्य प्रासंगिता लिए हुए है। 9

मुख्य शब्द– रीतिसिद्ध, श्रृंगार, गागर में सागर, प्रासंगिता, दोहे, बिहारी।

हिन्दी साहित्य में आदिकाल अपने वीर रस भक्ति काल अपने शांत रस रीतिकाल अपने श्रृंगार रस आधुनिक काल अपने राष्ट्रीय प्रेम से ओत–प्रोत काव्य के लिए प्रसिद्ध है। रीतिकाल मध्यकालीन काव्य के अन्तर्गत आता है। इसमें रसराज श्रृंगार रस का आधिपत्य है। इस काल में कवियों ने भक्ति का भी पुट दिया है, लेकिन आधार श्रृंगार रस ही रहा है।

बिहारी ने अपने एक मात्र ग्रंथ सतसई के आधार पर हिन्दी साहित्याकाश में अपने–आप को ध्रुवतारे के समान स्थापित किया है। जिस प्रकार आकाश में नक्षत्र उसके चारों ओर परिक्रमा करते हैं। उसी प्रकार श्रृंगारिक कवि बिहारी के चारों ओर परिक्रमा करतें हैं उनके काव्य का विस्तार ही आधुनिक कवियों में दिखाई पड़ता है। बिहारी और सतसई एक दूसरे के पूरक बन गए हैं। सतसई से ही बिहारी का परिचय होता है और यही बिहारी को पूर्णता प्रदान करता है। सतसई में बिहारी की काव्य दृष्टि, कल्पनाशक्ति, नीतिज्ञता, ज्योतिषज्ञान, सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक भावों का चित्रण आदि गुणों का चित्रण होता है, जो आधुनिक कवियों के लिए 'मील का पत्थर' साबित हुआ। कतिपय पाठक उसमें वासनाजन्य भाव देखते हैं वे उसके कलापक्ष, कवि–मेधा को नहीं समझ पाते जिससे बिहारी का स्तर निम्न हो जाता है, इसमें बिहारी का दोष नहीं है, दोष तो उन पाठकों का है जो उसमें काव्यात्मक गुण को नहीं देखते।

बिहारी हमारे लिए प्रासंगिक हैं, और प्रासंगिक रहेंगे यदि उनके काव्य पर दृष्टिपात किया जाए तो यह तथ्य सही सिद्ध हो जाएगा रीतिकालीन काव्य सामयिक प्रतीत होता है।

हिन्दी साहित्याकाश में शीतल बयार प्रवाहित करने वाले मध्यकालीन महाकवि बिहारी लाल का उदय सन् 1603 ई0 में ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर ग्राम में हुआ जिन्होंने कई राजाओं के दरबार में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, लेकिन उनको प्रसिद्धी जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के आश्रय में मिली।

कहा जाता है कि गुरू बाबा हरिदास ने शाहजहॉ के वृन्दावन आने पर बिहारी का परिचय उनसे कराया। शाहजहॉ बिहारी के व्यक्तित्व से अत्यन्त प्रभावित हुआ तथा उसने महाकवि से आगरा चलने के लिए भी कहा, किन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया।11

बिहारी ने किसी लक्षण–ग्रन्थ की रचना नहीं की, फिर भी काव्य–रचना करते समय उनका ध्यान काव्यांगों पर रहा। सतसई के अनेक दोहे रसों और अलंकारों के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किये जा सकतें है। बिहारी रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में गिने जातें है। भक्ति, नीति तथा ऋतु–वर्णन भी उनके काव्य के विषय रहे किन्तु प्रधानता प्रेम और श्रृंगार की हैं। वे रीतिकाल की रीतिसिद्ध धारा के कवि थे।

बिहारी– सतसई मुक्तक रचना है, जिसमें मुक्तक काव्य की सारी विशेषताएँ–विद्यमान हैं। बिहारी ने दोहा जैसे छोटे छन्द का प्रयोग कर विस्तृत अर्थ की सफल अभिव्यंजना की है। किसी–किसी दोहे में अभीष्ट अर्थ ग्रहण करने के लिए काव्य– परम्परा की समूची पृष्ठभूमि के ज्ञान की आवश्यकता होती है। बिहारी सतसई ही कवि की धवल कीर्ति की समुज्जल पताका है। बिहारी के काव्य में चमत्कार प्रदर्शन, बहुज्ञता एवं आलंकारिता का अद्भुत मेल है। दोहे जैसे छोटे छन्द में उन्होंने इतने भाव भर दिए हैं कि उनके विषय में यह कहा जाने लगा कि उन्होंने 'गागर में सागर' भर दिया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बिहारी के दोहों को रस की फुहार कहा है। श्रंगार रस के अतिरिक्त भक्ति एवं नीति विषयक दोहों की रचना भी बिहारी ने की है।

बिहारी के इष्ट देव, श्री कृष्ण थे। उन्होंने राधा वल्लभ सम्प्रदाय के अनुसार ही भक्ति की है। जिसमें उनकी आत्मसमर्पण की भावना दिखाई देती है वे राधा को सम्बोधित करते हुए कहते है कि–

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय,
जा तन की छांई परै,श्याम हरित दुति होय।

बिहारी ने अपने श्रंगार रस से सम्बन्धित दोहों में मौलिकता दर्शायी है। उन्होंने श्रृंगार रस के दोनों पक्षों को बडी सफलता के साथ चित्रित किया है। एक साधारण नायक–नायिका का प्रेमालाप को वर्णन करते हुए वह कहते हैं–3

कहत नटत रीझत खिझत मिलत हसत लजियात,
भरे भौन में करत है नैननु ही सौं बात।

जिन बातों का वर्णन अन्य कवि कई–कई पंक्तियों में नहीं कर पाए उसको महाकवि बिहारी ने दो पंक्तियों में समाहित कर दिया है। इसी प्रकार बिहारी ने वियोग श्रंगार का वर्णन भी बडी सिद्धहस्तता से किया है–

औधाई सीसी, सु लखि बिरह– बरनि बिललात,
विच हीं सूखि गुलाबु गौ, छीटौ हुई न गात।

बिहारी पर उनके आलोचक आरोप लगाते है कि उन्होंने अतिश्योक्ति पूर्ण वर्णन किया है यही तथ्य उनकी सफलता को सिद्ध करता है। उन्होंने जिस समय इन दोहों की रचना अपने मस्तिष्क में चित्र बनाकर की है पाठकों को आज भी उन दोहों को पढकर उसी चित्र की अनुभूति अपने हदय में होती है और वे आज भी रस विभोर हो जातें हैं। उसमें डूब जाते हैं, उन्हें ऐसा आभास होता है जैसे कि मानो उन्हीं का वर्णन किया जा हो। यह पाठकों के साथ साहचर्य उनकी सफलता को दर्शाता है।

ग्रियर्सन उनको भारत का थाम्प्सन मानतें हैं। बिहारी लाल वह पारसमणि थे जिन्होंने महाराजा जयसिहं को प्रेमपाश में फंसे हुए को (अपनी नवोढा पत्नी के भोग–विलास में) बाहर निकाला उन्होंने जयसिंह को निम्न दोहा लिखकर भेजा–

नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल,
अली कली ही सौं बॅध्यों, आगे कौन हवाल।

बिहारी के श्रंगार सम्बन्धी दोहे अपनी सफल भावाभिव्यक्ति के लिए विशिष्ट समझे जाते हैं। इसमें संयोग एवं वियोग श्रंगार के मर्मस्पर्शी चित्र मिलते हैं। इसमें आलम्बन के विशद वर्णन के साथ साथ उद्दीपन के भी चित्र हैं। श्रंगार के अतिरिक्त बिहारी ने नीति, भक्ति, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद तथा इतिहास आदि विषयों पर भी दोहों की रचना की है जो श्रृंगार के दोहों की भॉति ही सशक्त भावाभिव्यक्ति से पूर्ण हैं।

बिहारी का काव्य उनकी काव्यात्मक प्रतिभा के ऐसे विलक्षण एवं अद्भुत स्वरूप को प्रस्तुत करता है जो हिन्दी काव्य जगत के विख्यात कवियों के लिए भी विस्मयपूर्ण रहा है। शास्त्रीय नियमों का पूर्ण पालन करते हुए भी इनके दोहों की भावानुभूति सम्बन्धी तीव्रता अत्यन्त सशक्त है।

रीतिकालीन कवि बिहारीलाल अपने ढंग के अद्वितीय कवि हैं। तत्कालीन परिस्थितियों से प्रेरित होकर इन्होंने जिस साहित्य का सृजन किया वह हिन्दी–साहित्य की अमूल्य निधि है। सौंदर्य– प्रेम के चित्रण में भक्ति एवं नीति के समन्वय में, ज्योतिष गणित दर्शन के निरूपण में तथा भाषा के लाक्षणिक एवं मधुर व्यंजक प्रयोग की दृष्टि से बिहारी बेजोड हैं। भाव और शिल्प दोनों दृष्टियों से इनका काव्य श्रेष्ठ है। 16

पं0 पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी के काव्य की सराहना करते हुए लिखा है–

'' बिहारी के दोहों का अर्थ गंगा की विशाल जलधारा के समान है, जो शिव की जटाओं में तो समा गई थी, परन्तु उसके बाहर निकलते ही वह इतनी असीम और विस्तृत हो गई कि लम्बी–चौड़ी धरती में भी सीमित न रह सकी। बिहारी के दोहे रस के सागर हैं, कल्पना के इन्द्रधनुष हैं, भाषा के मेघ हैं। उनमें सौन्दर्य के मादक चित्र अंकित है''।

बिहारी ने एक–एक दोहे में विभिन्न गहन भावों को भरकर अलंकार, नायिका–भेद, भाव–विभाव, अनुभाव संचारी भाव आदि रव एवं अलंकार सम्बन्धी जो उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की है, वह अद्भुत है।

रीतिकालीन कवि बिहारीलाल हिन्दी साहित्य के जाज्वल्यमान् नक्षत्र है जिन्होंने केवल एक ग्रंथ लिखकर ही रीतिकाल में रीति सिद्ध कवि के रूप में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया दोहे जैसे छोटे छन्द में इन्होंने एक साथ अनेक भावों को गूँथ दिया है। भाव और शिल्प दोनो ही दृष्टियों से इनका काव्य महान है। इनके दोहे सीधे हृदय पर चोट करतें हैं।

बिहारी लाल केशवराय के पुत्र थे, इसमें विद्वानों में मतैक्य नहीं है, कुछ विद्वान मानते हैं कि यह प्रतिष्ठित केशवदास के पुत्र हैं जबकि विद्वानों का एक वर्ग ऐसा नही मानता उनका तर्क है कि इन दोनों में गोत्र का अंतर है। इस ऊहापोह में पड़कर इनकी विद्वता को कम नहीं आंका जा सकता है। इनके साहित्य को लेकर डा0 नवल किशोर श्री वास्तव का मन्तव्य दर्शनीय है–''बिहारी श्रृंगार रस वर्णन, पदविन्यास, चातुर्य, अर्थ गांभीर्य, स्वभावोक्ति और स्वाभाविक बोलचाल आदि खास गुणों में अपना जोड नहीं रखते हैं। इस प्रकार बिहारी ने जिस समास शैली व समाहार शक्ति का परिचय दिया है उसे उनकी मौलिकता कहना चाहिए।''14

संयोग श्रृंगार वर्णन में बिहारी के प्रेमी और प्रेमिका में परस्पर इतनी निकटता है जिसके कारण वे अपने द्वैत भाव को भी भूलकर एकरूप हो जातं हैं। मिलन के प्रकरणों में मनोवैज्ञानिक चित्रण के साथ बिहारी ने सांकेतिक दृश्यों का भी अनुपम चित्रण किया है। कवि की दृष्टि नायिका के बाह्य रूप सौंदर्य के वर्णन, नख शिख विवेचन में जितनी रमी है उतनी आन्तरिक रमणीयता के प्रकाशन में नहीं। उनके काव्य में जहॉ पाराम्परिक श्रृंगार का वर्णन है वहॉ मौलिक उद्भावनाएं भी प्राप्त होती हैं। आलम्बन के विशद वर्णन के साथ उददीपन के चित्र भी है।

पूर्वानुराग से लेकर करूणात्मक विप्रलम्भ तक का जो अत्यंत सूक्ष्म निरूपण बिहारी ने अपने दोहों में किया है, वह हिन्दी में अन्यत्र दुर्लभ है। भावाभि व्यक्ति की संक्षिप्तता उनकी बहुत बडी विशेषता है। बिहारी का प्रकृति वर्णन भी बडा सुन्दर है, परन्तु उददीपन रूप में ही चित्रित किया गया है।

सतसई की भाषा बडी प्रौढ़, प्रांजल, परिष्कृत और परिमार्जित ब्रज–भाषा है, परन्तु इसमें समय के प्रचलित अरबी–फारसी के शब्दों का भी बिहारी ने प्रयोग किया है। उक्तिवैचित्य तथा शब्द चित्रों की दृष्टि से इनकी सतसई सचमुच बेजोड है। हिन्दी–जगत में इनकी सतसई का सम्मान बहुत हुआ। बड़े–बड़े महाकवियां ने इस पर टीका लिखने में गर्व समझा।

कहा जाता है कि महाराजा नरेश जय सिह इन्हें प्रत्येक दोहे पर एक स्वर्ण–मुद्रा दिया करते थे इनके दोहों के विषय में यह उक्ति प्रसिद्ध है–

सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर,
देखन में छोटे लगै घाव करैं गम्भीर।

बिहारी की काव्य प्रतिभा इनके परवर्ती कवियों का ध्यान भी अपनी ओर आकृष्ट करती रही। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनके दोहों की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि ''इनके दोहे क्या हैं ? रस की छोटी–छोटी पिचकारियॉ हैं जो मुहॅ से छूटते ही श्रोता को सिक्त कर देती है। 18

बिहारी का काव्य उनकी काव्यात्मक प्रतिभा के ऐसे विलक्षण एवं अद्भुत स्वरूप को प्रस्तुत करता है, जो हिन्दी काव्य जगत के विख्यात कवियों के लिए भी विस्मयपूर्ण रहा है।

डा0 नगेन्द्र ने लिखा है कि जैसा कि शास्त्रीय पृष्ठभूमि से स्पष्ट है, रीति सम्प्रदाय, रचना अथवा ब्रहमनकार को ही काव्य का सर्वस्व मानकर चला है। सम्भव है आरम्भ में हिन्दी में रीति शब्द का मूल अर्थ रीति–सम्प्रदाय से ही लिया गया हो, परन्तु वास्तव में यहॉ इसका प्रयोग सर्वथा सामान्य एवं व्यापक अर्थ में हुआ है।

बिहारी सतसई पर अलग–अलग विद्वानों के अलग– अलग मत है। डा0 गोविन्द चातक ने कहा है कि बिहारी सतसई पर गाथासप्तशती एवं अमरूक शतक का प्रभाव विशेष रूप से पडा है। बिहारी सतसई इतनी अधिक विशिष्टताओं से युक्त है कि उनका उल्लेख संक्षेप में नही किया जा सकता। यह वह ग्रन्थहै जिसने बिहारी को लोकप्रियता के चरम शिखर पर पहुचाया और साथ–साथ उन्हें महाकवि की पदवी भी दिलाई।

डा0 उर्मिला नाटीला के मतानुसार भले ही बिहारी की सतसई स्वर्ण मुद्रायें प्राप्त करने के आकर्षण से प्रेरित होकर लिखी गई थीं, किंतु इसके एक–एक दोहे का मूल्य अनगिनत स्वर्ण मुद्राओं से अधिक है। बिहारी सतसई में श्रृंगार रस प्रधान हैं, किन्तु भक्ति नीति और दर्शन भी उनके दोहों में वर्ण्य–विषय रहा है।

कनक–कनक तै सौगुनी मादकता अधिकायै,
वा खाये वौराये जग वा पायै बौरायै।

उस कवि मेधा को प्रमाण है जिसने भावी कवियों को एक नया आयाम प्रस्तुत किया इतने वर्षो के बाद भी उनके काव्य के आधार पर उनको स्मरण किया जाता है, और सदैव ही स्मरण किया जाता रहेगा। उनका काव्य कालजयी है। उन्होंने श्रृंगार रस का जो संदेश दिया वह वास्तव में अतुलनीय है और वर्तमान में भी वह वास्तव में प्रांसगिकता लिए है।

सन्दर्भ

1. बिहारी के दोहे : गागर में सागर, षब्द, सरोकार (अक्टूबर–दिसम्बर 2006)
2. काला पहाड़ उपन्यास और मेवात, आँचल का जीवन, षब्द सरोकार (जनवरी–मार्च 2007)
3. हिन्दी उपन्यास और आनचालिकता, षब्द सरोकार (अप्रैल–जून 2007)
4. उपनिवषबद्ध से उत्तर उपविनषबद्ध की संतति तथा बदलते परिप्रेक्ष्य, रचनाक्रम (अक्टूबर–दिसम्बर 2007)
5. अनचालिक उपन्यास और लोक संस्कृति, हिमप्रस्थ (मार्च – 2008)
6. अनचालिक उपन्यास और लोक गीत, पंजाब सौरभ (अक्टूबर – 2007)
7. हिन्दी गजल में सार्थक कदम, षब्द सरोकार (जनवरी–मार्च 2008)
8. पहद चोर उपन्यास में अनचालिकता, षब्द सरोकार (अप्रैल–जून 2008)
9. भगत कबीर की भाशा, पंजाब सौरभ (जनवरी–मार्च 2007)
10. अनचालिक उपन्यास और जनजतिया जीवन का यथार्थ (जनवरी–मार्च 2009)
11. अनचालिक उपन्यास और जातिवाद की राजनीति षब्द सरोकार (जुलाई–सितम्बर 2009)
12. रियुती सरन षर्मा का हिन्दी नतिया जगत में योगदान षब्द सरोकार (अक्टूबर–दिसम्बर 2010)
13. विरेन्द्र जैन के साहित्य में सामाजिक यथार्थ षब्द सरोकार (अक्टूबर–दिसम्बर 2010)
14. अनचालिक उपन्यास और मुस्लिम जीवन पंजाब–सौरभ (मार्च – 2012)
15. हिन्दी के अनचालिक उपन्यासों में नारी जीवन से सम्बन्धित समस्याऐं पंजाब सौरभ (सितम्बर – 2011)
16. भगत सैन जीवन के साहितय का मूल्यांकन षब्द सरोकार (अप्रैल–जून 2011)
17. भगत सैन की वाणी एवं सत्संग का महत्व षब्द सरोकार (अक्टूबर–दिसम्बर 2011)
18. अनचालिक उपन्यास और दलित विमर्ष हास्य की आवाज (फरवरी – 2012)